■ **यह समाचार पढ़ें और 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' कविता के आधार पर विष्णु कुमार के कार्य पर चर्चा करें।** ഈ വാർത്ത വായിക്കാം, 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' കവിതയുടെ അടിസ്ഥാനത്തിൽ വിഷ്ണുകുമാറിന്റെ കാര്യം ചർച്ച ചെയ്യാം.

केरल बाढ़: मध्यप्रदेश के विष्णु ने कायम की मिसाल

भोपाल: केरल .....पहुँचा सकें।

(Textbook page 18 കാണുക.)

'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' कविता में कवि कहते हैं कि हम असहाय व्यक्तियों की मदद ज़रूर करें, चाहे वे हमारे परिचित न हों। यहाँ "कंबल बेचनेवाले विष्णु कुमार ने केरल के बाढ़ पीडित लोगों को ओढ़ने के लिए करीब 50 कंबल मुफ्त में दिए थे। अपरिचित होने पर भी वह दूसरों की मदद करता है। उसके दिल में सहानुभूति है।

'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था' कविता की आस्वादन टिप्पणी तैयार करें। കവിതയ്ക്ക് ആസ്വാദനക്കുറിപ്പെഴുതാം.

हिन्दी के प्रसिद्ध कवि विनोदकुमार शुक्ल की एक कविता है 'हताशा से एक व्यक्ति बैठ गया था।' मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। अपने सुख-दुःख के समान उसे दूसरों का सुख-दुःख भी जानना चाहिए। अक्सर किसी व्यक्ति को 'जानने' का अर्थ है उसका नाम, पता, उम्र, ओहदे या जाति से जानना। कवि के अनुसार यह असली "जानना" नहीं है। अगर हम किसी व्यक्ति को उसकी हताशा, निराशा, असहायता या उसके संकट से नहीं जानते तो हम कुछ नहीं जानते। यही है मनुष्य को मनुष्य के समान पहचानना। सड़क पर घायल पड़ा व्यक्ति हमारेलिए अपरिचित कैसे हो सकता है? वास्तव में हम उसे जानते हैं, परन्तु हम उसे न जानने का बहाना करते हैं। हताश व्यक्ति के सामने हाथ बढ़ाने पर दोनों एक-दूसरे को जानने लगते हैं। मुसीबत में पड़े लोगों की सहायता करना हर मनुष्य का कर्तव्य है। हमारे चारों ओर के हताश, निराश और असहाय लोगों को पहले हम जानें और उनकी मदद करें। मनुष्यता की कोई भाषा नहीं।